| | | | |
|---|---|---|---|
| <?xml version="1.0" ?> | | | |
| <?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?> | | | |
| <Doc id="mai-w-media- | MT00001(b) | " | lang="Maithili "> |
| <Header type="text"> | | | |
| <encodingDesc> | | | |
| <projectDesc> | CIIL-Maithili Corpora, Monolingual Written Text | | </projectDesc> |
| <samplingDesc> | Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures, tables and verses have been omitted. Samples taken from page 16-27 | | </samplingDesc> |
| </encodingDesc> | | | |
| <sourceDesc> <biblStruct> <source> | | | |
| | <category> | Aesthetics | </category> |
| | <subcategory> | Literature-Biographies | </subcategory> |
| | <text> | Book | </text> |
| | <title> | tArAshaMkara baMdhyOpAdhyAya | </title> |
| | <vol> | | </vol> |
| | <issue> | | </issue> |
| </source> | | | |
| <textDes> | | | |
| | <type> | | </type> |
| | <headline> | | </headline> |
| | <author> | mahAshvEtA dEvI | </author> |
| | <translator> | nibhA siMha | </translator> |
| | <words> | 4,206 | </words> |
| </textDes> | | | |
| <imprint> | | | |
| | <pubPlace> | India-New Delhi | </pubPlace> |
| | <publisher> | sAhitya akAdamI | </publisher> |
| | <pubDate> | 1996 | </pubDate> |
| </imprint> | | | |
| <idno type="CIIL code"> | | | </idno> |
| <index> | | MT00001(b) | </index> |
| </biblStruct> </sourceDesc> | | | |
| <profileDesc> <creation> | | | |
| | <date> | | </date> |
| | <inputter> | H.S.Rupa | </inputter> |
| | <proof> | Arun Kumar Singh | </proof> |
| </creation> | | | |
| <langUsage> | | Maithili | </langUsage> |

| | | |
|---|---|---|
| <wsdUsage> | | |
| <writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem> | | |
| </wsdUsage> | | |
| <textClass> | | |
| <channel mode="w"> | print | </channel> |
| <domain type="public"> | | </domain> |
| </textClass> | | |
| </profileDesc> | | |
| </Header> | | |
| <text><body> | | |

| | | |
|---|---|---|
|  | १९३३ ई. मे जखन ताराशंकर रहबाक लेल कलकत्ता ऐलाह तखन बंगालक साहित्यिक वातावरण केहन छल? |  |
|  | वर्त्तमान समय जकाँ कलकत्ता ओहि समयमे सेहो बंगालक गतिविधिक केन्द्र छल। राजनैतिक गतिविधिक विभिन्न केन्द्र सेहो। छोट-छोट शहर सभमे सेहो साहित्यिक केन्द्र छल; मुदा कलकत्ता एहन स्थान छल जाहिठाम लेखक एकत्र होइत छलाह, पत्रिका एवं पुस्तक सभ प्रकाशित होइत छल। टैगोर एवं शरतचन्द्रक अतिरिक्त आन कोनहु लेखककेँ नीक पारिश्रमिक नहि भेटैत छलनि तथापि बहुतो, लेखनकेँ अपन व्यवसाय बनौने छलाह। साहित्य हुनका सभक जीवन छल। |  |
|  | किछु गोटे मरि गेलाह। अचिंत्यकुमार सेनगुप्त लिखैत छथि "-हमरा मृत्युसँ प्रेम भ' गेल छल। राजनैतिक एवं साहित्यिक दुनू प्रकारक क्रांतिकारी सभक लेल मृत्यु रोमांचसँ भरल छल।'' (कल्लेक युग : अचिंत्यकुमार सेनगुप्ता) ई ओ युग छल जखन कल्पनाशील आ समर्पणक भावना सँ युक्त नवयुवक वा तँ लेखक बनि जाइत छल अथवा क्रांतिकारी। |  |
|  | लेखक लोकनि जनैत छलाह जे लेखनक व्यवसाय चुनबाक निश्चित अर्थ अछि गरीबी और भुखमरी। ताराशंकरकेँ थोड़ेक जमीन छलनि। ओ भूखसँ नहि मरितथि। यद्यपि हुनक ई निर्णय सरल नहि छल। ओ संयुक्त परिवारक सभसँ पैघ पुरुष सदस्य छलाह। दोसराक कल्याणक दायित्व हुनकेपर छल। वर्त्तमान शताब्दीक दोसर दशकक अन्तिम आ तेसर दशकक' प्रारम्भिक वर्षमे टैगोरक "मालंच" (फुलवारी) ; 'चारि अध्याय', "दुइ बोन" (दू बहिन) ; शरतचन्द्रक "श्रीकांत : तृतीय पर्व (श्रीकांतक जीवनक तेसर भाग) और "शेष प्रश्न" प्रकाशित भेल। टैगोरक "चतुरंग", "घरे-बाइरे" और शरत्चन्द्रक "पथेर दाबी" पहिनहि प्रकाशित भ' गेल छल। "पथेर दाबी" एक निर्भीक क्रान्तिकारीक विषयमे लिखल उपन्यास छल जे बंगालमे क्रांति आनि देने छल। |  |
|  | "कल्लोल" पत्रिका आ ओहिसँ जुड़ल लेखक सभक विषयमे बहुत किछु कहल जा चुकल अछि। सत्य तँ ई अछि जे विश्व सामान्यतः राजनैतिक एवं आर्थिक महापरिवर्तन तथा आशांति कालक अनुभव क' रहल छल। अनित्य कालावधिक अशांतिमे फँसल ओहि समयक जनताकेँ सौम्यता, संतोष एवं मौन सम्मतिक साहित्य अवास्तविक लगैत छलैक। गुलाम देशक जनतापर रुसी क्रांतिक जबरदस्त प्रभाव पड़ल छल। युद्धक पश्चात् (१९१४ ई.—१८ई.) विश्व छोट भ' गेल छल आर लोक आन लोक सभक, आन देश सभक विषयमे जनबाक लेल उत्सुक छल एवं युवा पाठक एहन लेखक सभक स्वागत करैत छलाह जिनक रचना सभसँ ओ देश तथा भाषाक सीमा नाँधि विभिन्न विचार सभसँ तादात्म्य अनुभव क' सकैत छलाह। जोला, गोर्की, हैमसन, बोजर, रोलाँ एवं अन्य लेखकगण स्वभावतः बंगालक नव |  |

| | | |
|---|---|---|
| | पाठक एवं लेखक सभकेँ आकर्षित क' रहल छलाह। | |
|  | कटु-यथार्थ एवं रूमानी---निराशावादक चित्रण "कल्लोल" मे प्रकाशित कथा, उपन्यास एवं कविता सभक मुख्य स्वर प्रतीत होइछ। मुदा "कल्लोल" सेहो कोनो नव धरतीक सृष्टि नहि कैने छल। "भारती", "सबुज पत्र", "मानसी" आदि पत्रिका सभकेँ ध्यानसँ देखबाक पश्चात् ई बात स्पष्ट भ' जाइछ जे किछु लेखक बंगला साहित्यमे एहि प्रवृत्ति सभक समारम्भ पहिनहि क' चुकल छलाह। पूर्ववर्ती पीढ़ीक लेखक सभमे सँ चारुचन्द्र बनर्जी, प्रेमकुमार अतर्थी, मणिन्द्रलाल बसु और हेमेन्द्र कुमार राय विशेष रूपसँ उल्लेखनीय छथि। जगदीश गुप्त और रमेशचन्द्र सेन किछु बादमे लिखब आरम्भ कैलनि, मुदा एहि दुनू लेखकक लेखनमे सेहो सामाजिक यथार्थक गम्भीर अन्तर्दृष्टि भेटैछ। |  |
|  | "कल्लोल" पत्रिकाक विषयमे बहुत किछु कहल गेल अछि, मुदा एक महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक तथ्यपर बड़ कम ध्यान देल गेल अछि। एहि पत्रिकासँ जुड़ल लेखक नवयुवक छलाह। हुनक युग चरम अशांतिक युग छल, तथापि ओ लोकनि नितान्त अराजनैतिक रहलाह तथा देशकेँ विचलित करयवला धारासँ पृथक् रहलाह। समसामयिक अशांतिक प्रति उदासीन रहि ओ लोकनि एक तरहक परम्पराक आरम्भ कैलनि, जकर पालन आइ धरि हमरा सभक अधिकांश लेखक क' रहल छथि। "कल्लोल"क स्थापना तेसर दशकमे भेल छल। १९२४ ई. मे भारतीय कम्यूनिस्ट सभक पहिल दलपर कानपुर षड्यंत्रक मेकदमा चलल। ओहि साल एक बंगाली युवक, गोपीनाथ साहा, एक यूरोपीय व्यक्तिकेँ एक कुख्यात अँग्रेज पुलिस अफसर बुझि कलकत्ताक सड़कपर गोली मारि देलनि आर बादमे एहि लेल हुनका फाँसी भेल। १९२५ ई. मे किछु आतंकवादी काकोरी रेलवे स्टेशन पर गार्डसँ खजाना छीनी लेलक, और बाद ने काकोरी मोकदमामे किछु लोककेँ फाँसी द' देल गेल। ओहि वर्ष दक्षिणेश्वर बमकांड भेल। १९२६-२७ई. मे मजदूर और किसान पार्टीक स्थापना भेल छल। चटगाँव शस्त्रागारपर हमलाक उल्लेख ऊपर भ' गेल अछि। १९३१ ई. मे मिदनापुरक हिजली जेलमे गोली चलाक' पुलिस दूटा कैदीकेँ मारि देलक। १९३१, ३२और ३३ई.मे मिदनापुरक तीन टा अँग्रेज जिला मजिस्ट्रेटकेँ आतंकवादी मारि देलक। पुलिस द्वारा यातना और आतंक अक्षुण्ण रूपसँ चलैत रहल। ई आशा करब स्वाभाविक छल जे प्रत्येक लेखक एहन घटना सभपर प्रतिक्रिया व्यक्त करत तथा अपन लेखनमे अपन विचार सभकेँ लिपिबद्ध करत। मुदा "कल्लोल"क लेखक सभसँ ई नहि भेल। हुनक साहित्यिक चिंतनपर प्रमुख रूपसँ रूमानी-निराशावादिता और साहित्यिक रूढ़िक विरुद्ध अस्पष्ट विरोध, यैह प्रभाव परिलक्षित होइछ। मुदा इहो कहल जा सकैछ जे हुनक अराजनैतिक दृष्टिक पाछाँ कोनहुँ आन उद्देश्य नहि छल। ओहि मे सँ किछु लेखक दलित और सुविधाहीन सभक प्रति प्रेमकेँ अपन मुख्य विषय बनैलनि। शराबी, वेश्या, और अपराधीक विषयमे मनीश घटकक (उपनाम :युवनाश्व) "कल्लोल" क लेल लिखल गेल कथा सभ उल्लेखनीय अछि। नृपेन्द्रकृष्ण चटर्जी उचित समय बुझि गोर्कीक उपन्यास "माँ" क अनुवाद कैलनि, मुदा ओ "कल्लोल" क लेल नहि छल। हमरा सभक समयक ऐतिहासिक सन्दर्भमे देखल जाय तँ "कल्लोल"क साहित्यिक उपलब्धि बेसी महत्त्वपूर्ण नहि बुझायत। |  |
|  | ताराशंकर एहि समयक उल्लेख सहानुभूति एवं उदारतासँ कैलनि, "आलोचक कहैछ जे एहि समयक साहित्यिक धारा तत्कालीन यूरोपीय साहित्यिक धाराक प्रतिध्वनि आर अनुकरण छल, आ से आलोचक मिथ्या नहि कहैत छथि। एहन अनुकरण निस्संदेह भेटैछ मुदा, बेसी सत्य ई अछि जे लेखक असंतोष आ अशांतिसँ संत्रस्त छलाह। जनांदोलन दू बेर—१९२१ ई. |  |

| | | |
|---|---|---|
| | एवं १९३० ई. मे विफल भ' चुकल छल। अहिंसक आन्दोलनक सिद्धान्त और यथार्थक मध्य समन्वय स्थापित करबाक प्रतिश्रुतिसँ हम सभ बड़ आश्वस्त भेल छलहुँ। ओ प्रतिश्रुति भंग भ' गेल। प्रथम विश्व युद्धक फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्वमे राजनैतिक एवं आर्थिक उथल-पुथल भ' चुकल छल। हमरा सभक जीवन सामान्यतः असन्तोष आर अशांतिसँ भरल छल। अहिंसाक अवज्ञामे आतंकवादक पुर्नगमन वस्तुतः वैह असन्तोषक अभिव्यक्ति छल। साहित्यक उद्देश्य समन्वयक लालसाक प्रतिफलन नहि, अपितु विद्रोह करब छल। साहित्यक मुख्य उद्देश्य यैह छल।अतएव नव साहित्य-धाराक आरम्भ अधैर्य और अशांतिक मध्य भेल।" | |
|  | बंगालक राजनैतिक वातावरणक युवा लेखक सभपर कोनहु प्रभाव पड़ल हो, एहन नहि प्रतीत होइछ। ओ सभ साहित्यमे क्रांति आनय चाहैत छलाह ने कि व्यवस्था मे। मुदा हुनक विद्रोहक भावना ओहि अशांतिसँ भरल वातावरणमे जागल छल जाहिमे ओ साँस ल' रहल छलाह। सब लेखक अपन प्रथम परिचयक लेल "कल्लोल" पर निर्भर नहि छलाह। "प्रवासी", "विचित्रा", और "भारतवर्ष" तीनू अत्यंत प्रसिद्ध पत्रिका छल। "प्रवासी" कें सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त छल। अचिंत्यकुमार सेनगुप्त "कल्लोल" सँ पूर्व "प्रवासी" क लेल लिखने छलाह। माणिक बनर्जी, "विचित्रा" क लेल कथा सभ लिखने छलाह। विभूति भूषण बनर्जीक १९२९ ई. मे प्रकाशित "पथेर पाँचाली" (पथक पाँचाली) साहित्यक दृष्टि सँ आरो बेसी महत्त्वपूर्ण छल। ई प्रसिद्ध उपन्यास "विचित्रा" मे धारावाहिक रूपमे छपल छल। सजनीकान्त दास "शनिवारेर चिट्ठी" (शनि दिनक चिट्ठी) नामक पत्रिकाक सम्पादन करैत छलाह जे अपन अनुदारवादी एवं दृढ़ विचारक लेल विख्यात छल। सुरेशचन्द्र चक्रवर्ती बनारससँ "उत्तरा"क सम्पादन करैत छलाह। धूर्जटीप्रसाद मुखर्जी "उत्तरा" क नियमित लेखक छलाह। सुधीन्द्रनाथ दत्त १९३१ ई. सँ "परिचय" नामक त्रैमासिकक प्रकाशन आरम्भ कैलनि। बुद्धदेव बसुक काव्य—त्रैमासिक "कविता" पहिल बेर १९३६ ई.मे बहरायल। "परिचय" गम्भीर साहित्यक उच्च स्तर स्थापित कैलक। आधुनिक—काव्यक प्रेरणाक दिशामे "कविता"क अपार सेवा रहल। "कविता" एहन समयमे आधुनिक कवि सभकें छापि आधुनिक काव्यक धरातलक निर्माण कैलक जखन आधुनिक कविता लिखब पाप बूझल जाइत छल। कोनहु आन पत्रिका नव कवि सभकें प्रोत्साहन नहि देलक। |  |
|  | टैगोरसँ ताराशंकरक पहिल भेंट ग्राम-विकासक कार्यक्रममे भेल छल। किछु समयक उपरान्त ताराशंकर अपन उपन्यास"राइकमल" (एकटा वैष्णव कन्याक नाम) और कहानी संग्रह "छलनामयी" (दुर्ग्राह्य) डाकसँ टैगोरकें पठौलनि। टैगोरकें उपन्यास पसिन पड़लनि आर ओ हिनका ई लिखबो कैलनि। एक दोसर पत्र आयल, जाहिमे कथा सभक बड़ प्रशंसा कैल गेल छल। ताराशंकर टैगोर सँ भेंट करबाक लेल शान्तिनिकेतन गेलाह। टैगोर कें ताराशंकरसँ अपन प्रथम भेंटक स्मरण नीक-जकाँ छलनि, ओ कहलनि जे बंगला साहित्यमे ग्रामीण विषयपर ताराशंकर सन चित्रण हुनका, पहिने कतहु नहि भेटल छल। गामक चुड़ैलक विषयमे लिखल गेल कथाक सन्दर्भमे टैगोर कलकत्ताक एक विद्वानसँ अपन वार्तालापक उल्लेख कैलनि। ओ विद्वान कहने छलाह जे ई विषय-वस्तु निश्चित रूपसँ पाश्चात्य साहित्यसँ लेल गेल हैत। अपन धरतीसँ बंगला लेखकक अपरिचयपर टैगोर दुःख प्रकट कैलनि। टैगोरक प्रशंसा पाबि ताराशंकर अभिभूत भ' गेलाह। ओ टैगोर सँ पुनः कलकत्तामे भेंट कयलनि एवं हुनका "जलसाधर" नामक कथा-संग्रह भेंट कैलनि। ठीक एकर पश्चात् टैगोर गम्भीर रूपसँ अस्वस्थ भ'गेल छलाह। अस्वस्थतासँ ठीक पहिनहि ओ "रायबाड़ी" (राय सभक मकान) कथा |  |

| | | |
|---|---|---|
| | पढ़ने छलाह। ओहि कथामे रावणेश्वर राय अपन घर छोड़ि कए जा रहल अछि मुदा जखन ओ घरक अन्तिम दर्शनक लेल पाछाँ घूमि कए देखैत अछि, ओकरा जलसाघरक बड़ैत दीपक संकेत सँ आपस बजबैत प्रतीत होइछ और ओ घूरि जाइत अछि। टैगोरकेँ अपन बेहोशीसँ होशमे आयब और रावणेश्वरक आपसीमे साम्य भेटलनि। | |
|  | पुनः जखन ओ शांतिनिकेतन गेलाह तँ टैगोर ई जानय चाहलनि जे ताराशंकर कियैक नहि जल्दी-जल्दी शांतिनिकेतन अबैत छथि। ताराशंकरक साहित्यिक संस्मरण सभसँ ज्ञात होइछ जे टैगोर ताराशंकरकेँ शान्तिनिकेतन सँ बेसी घनिष्ठतासँ जोड़ेय चाहैत छलाह। ओ आगाँ स्मरण करैत छथि जे टैगोरक कहब छलनि जे जिलाक निवासी सभक लेल शांतिनिकेतन एक अपरिचित स्थान बनल अछि। ओ ई नहि बूझि सकैत छलाह जे अन्ततः बाधा कतय उपस्थित छैक। ई स्पष्ट अछि जे टैगोर ताराशंकरमे अजस्त्र सम्भावना देखने छलाह। यदि ओ अन्य तरहक व्यक्ति होइतथि तँ ओ टैगोरसँ बेसी आत्मीय होयबाक प्रयास करितथि। उदीयमान लेखक सभक लेल टैगोरक उदारता विख्यात छल। टैगोरकेँ ताराशंकरक रचना सभ नीक लगैत छल और ओ हुनका ई कहनहु छलाह। ताराशंकर अपन लाभक लेल एकर उपयोग नहि कैलनि, जाहिसँ हुनक दृढ़ चरित्रक पता चलैछ। |  |
|  | जखन ओ लेखक नहि छलाह तखन हुनका बेसी कष्टक सामना करै पड़लनि। यद्यपि अपन लेखनक आरम्भ मे हुनका किछु बाधाक सामना करै पड़लनि, तथापि सौभाग्यसँ तत्कालहि मान्यता सेहो हुनका भेटलनि। हुनका जकाँ बड़ कम लेखक एतेक सहजतासँ उत्कर्ष प्राप्त कैने छलाह। सौभाग्यसँ साहित्यिक जगतक अनेक प्रभावशाली व्यक्ति हुनक घनिष्ठ मित्र बनि गेल छलाह। सजनीकान्त दास, जिनकर तीक्ष्ण लेखन और कटु उक्तिसँ अनेक लेखक अशांत भ' जाइत छलाह, ताराशंकरक घनिष्ठ मित्र और सहयोगी छलाह। ओहि समयक एक अग्रगण्य कवि, निबन्धकार तथा आलोचक मोहितलाल मजुमदारक कहब छलनि जे ओ ताराशंकरकेँ अपन समयक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लेखक मानैत छथि। |  |
|  | बृजेन्द्र नाथ बनर्जी, जे प्रसिद्ध विद्वान, लेखक और 19 सम शताब्दीक बंगालक सर्वश्रेष्ठ दस्तावेजकार छलाह, ताराशंकरक मित्र और शुभचिन्तक छलाह। महान् सम्पादक एवं पत्रकार रमानन्द चटर्जी ताराशंकर कँ नियमित रूपसँ छपैत छलाह। यद्यपि प्रारम्भिक वर्षमे ताराशंकर कँ अपन एकटा पुस्तक छपैबाक लेल पाइक जोगार करै पड़ल छलनि, मुदा बादमे हुनका प्रकाशक भेटै मे विशेष कोनो कष्ट नहि भेलनि। गामक विषयमे ओ एक नव दृष्टिकोणसँ लिखि रहल छलाह। ओ एहन किछु नहि लिखैत छलाह जाहिसँ प्रश्न आ विवाद उठै। अनेक अर्थेँ ओ एक परम्परावादी छलाह। बंगालक पाठक समुदायकेँ सर्वदा एहन लेखक बेसी स्वीकार्य होइछ जे एक परिचित वातावरणक विषयमे, ग्रामीण बंगालक विषयमे लिखैत अछि। आधुनिक क्लासिक्सक रूपमे मान्य बेसी पुस्तक सभ ग्रामीण बंगालक विषयमे अछि। ताराशंकर एक नव उत्साह आर दुर्लभ निष्ठाक संग लिखि रहल छलाह, मुदाओ कोनो नव पथक निर्माण नहि क' रहल छलाह। ओ सहजहि स्वीकृत भ' गेलाह। |  |
|  | बंगला साहित्यमे ताराशंकरक प्रथम प्रवेश कथा लेखकक रूपमे भेल। |  |
|  | हुनक कथा सभक संख्या बड्ड बेसी अछि आर ओकरा श्रेणीबद्ध करब सेहो कठिन अछि, कियैक तँ राजनीति और इतिहासक प्रति अपन जागरुकताक कारणेँ ताराशंकर अपन जीवनक अनुभवक प्रत्येक विषयपर लिखने छथि। हम हुनक किछु प्रमुख कथा सभक चर्चा करब एवं ई देखब जे लेखकक मुख्य चिन्तनक विषय ओहिमे कोन तरहेँ प्रतिफलित भेल अछि। |  |

| | | |
|---|---|---|
| | “जलसाघर”, “रायबाड़ी”, “साढ़े सात गंडार जमींदार” (एकटा छोट जमींदार) एवं किछु आन कथा सब जमींदार सभक जीवनक विभिन्न पक्ष पर अछि। दरिद्र जमींदार सभक ह्वास और पतनक पुनरावृत्ति बहुतो कथा सभमे भेटैछ। “रायबाड़ी” उनैसम शताब्दीक जमींदार सभक प्रतिनिधि रूप रावणेश्वर रायक विषयमे अछि। तानाशाही, निष्ठुरता, निरंकुशता एवं उदारताक ओ मिश्रण अछि। ओकर पूर्वज कृषक सभक शोषण कय लूटि-खसोटि कए सम्पत्ति अर्जन केने छल। लम्पट आ कामुक रावणेश्वर राय एक आमोद-भावनक निर्माणकरबैत अछि। जाहि दिन ओहि भवनमे ओकर रंगरेली आरम्भ होइछ ओही दिन ओकर पत्नी और पुत्रक मृत्यु भ’ जाइछ। एहिसँ ओकरा भीषण आघात होइछ और ओ घर छोड़ि दैछ। मुदा जखन ओ पाछाँ घूमि अन्तिम बेर अपन महलक दिसि देखैत अछि तँ ओकरा घरक बरैत दीपक संकेत सँ आपस बजबैत प्रतीत होइछ और ओ घूरि जाइत अछि। | |
|  | ओकर पौत्र आ “जलसाघर”क नायक विश्वम्भर राय विरासतमे एक विशाल कर्ज, एक नम्हर मोकदमा आर राजसी मिजाजक अतिरिक्त अपन पूर्वजसँ और किछु नहि पबैत अछि। अतीत एवं ओकर मध्य कड़ीक रूपमे अव्यवहृत महल, एक वृद्ध घोड़ा और एक वृद्ध हाथी मात्र रहि जाइत अछि। जाहि दिन प्रीबी काउंसिलमे नवका धनिक, गांगुलीसँ ओ मोकदमा हारैत अछि, ओहूदिन ओहि भवनमे ओकर रंगरेली नहि रुकैत छैक। गंगूलीसँ अपमानित भए उत्तेजना मे आबि ओ भवनमे दूटा गायिका नर्तकीकेँ बजबैत अछि। एहि अन्तिम उत्सवमे ओ अपन एक-एक पाइ खर्च क’ दैत अछि। प्रातः काल उठि ओ पहिने जकाँ घोड़ाक जीन कसि घुमबाक लेल बहराइत अछि। मुदा जखन ओ उत्तेजित भए घोड़सवारी करैत गांगुलीक हाथेँ हारल गाम भ’ कए जाइत अछि तखन ओकरा यथार्थक बोधहोइछ। ओ एक उपहास कयनिहार नग्न आर घृण्य संसारक आँखिक समक्ष स्वयंकेँ नग्न अनुभव करैछ। ओ घर घूरि अबैछ। सीढ़ी पर चढ़ैत ओ देखैत अछि जे भवनक द्वार खुजल अछि, दीपाधारक दीप बरि रहल अछि। मढ़ल फोटोसँ ओकर पूर्वज व्यंग्यसँ एकटक ओकरा देखि रहल छथि। भयभीत भए ओ घूमि जाइत अछि। पूर्वजक फोटो सभमे ओकरा अपन प्रतिबिम्ब देखाइ पड़ैछ। जेना ओ पूर्वजसँ बिरासतमे भेटल कामुकताक प्रतिमूर्ति हो। आतंकित भए ओ नोकर सभकेँ आमोद-भवनक द्वार बन्द करबाक आदोश दैत अछि। |  |
|  | राय वंशक चरित्रांकनमे असाधारण सहानुभूति भेटैछ। जमींदार सभक प्रति ताराशंकरक सहानुभूति अन्त धरि बनल रहल। ई दुनू कथा अत्यन्त नाटकीयता और आवेशपूर्ण संवादसँ भरल अछि। “साढ़े सात गंडार जमींदार”क बनबिहारी सरकार वृद्ध, पराजित एवं समय द्वारा अस्वीकृत अछि। ओ अपन भातिजक संग रहैछ और अपन अधीनस्थ सँ कर संग्रह करबाक प्रयास करैछ। वास्तवमे क्यो कर देबाक परवाहि नहि करैछ, कियेक तँ प्रथमतः ओ एक अत्यन्त छोट जमींदार अछि, एवं दोसर कृषक वर्ग ई जनैछ जे ओ किछु करबामे पूर्णतः सामर्थ्यहीन अछि। ओकर व्यवहारसँ ओकर भातिज लज्जाक अनुभव करैछ। जखन एहि वृद्धकेँ ई अनुभव होइत अछि जे ओकर अस्तित्व निरर्थक अछि, तखन ओ अपन भातिजसँ अनुरोध करैत अछि जे ओकरा बनारस पठा देल जाय। ओकर त्रासदी दरिद्र जमींदारक त्रसादी ओतेक नहि अछि जतेक कि वृद्ध और असहाय लोकक त्रसादी, जे जनैछ जे ओकर निरन्तर उपस्थिति दोसरक जीवनक लेल बाधक अछि। निरर्थक और आश्रित ओकर जीवन आनक लेल अड़चन बनि जाइत अछि। |  |
|  | हुनक कथा सभक आधार प्राकृतिक भावावेश और नैसर्गिक रूप अछि। ओ एहि विचारकेँ |  |

| | | |
|---|---|---|
| | स्वीकारैत छलाह जे मनुष्यक असाधारण व्यवहार विचित्र मनोवेगक कारणेँ होइत अछि। तीव्र भावना और अतिनाटकीयता हुनका प्रिय छलनि, तेँ असामान्य परिस्थिति सबमे घटित नाटकीय घटना-सभमे हुनक रुचि छलनि। मानवीय मूढ़ता, प्रेम अवं भावावेश "बेदनी" (बंजारिन) और "तारिणी माझी"क विषय अछि, पहिल प्रेमक विषयमे अछि, और दोसर मनुष्यक आत्मरक्षात्मक स्वभावक विषयमे। बंजारिन राधिका प्रत्येक वर्ष अपन संगी शम्भू, एक वृद्ध तेंदुआ आर एक तम्बू ल' कए गामक मेला मे अबैत अछि। शम्भूक नारंगी केस और पिंजरामे बन्द तेंदुआक आकर्षणमे ओ अपन पतिकेँ छोड़ि चुकल अछि। आब तेंदुआ और शम्भु दुनू वृद्ध भ' गेल अछि। राधिका जवान अछि और उत्साहसँ भरल अछि। एक विलक्षण निष्ठासँ ओ शम्भूक संग दैत अछि। एहि वर्ष राधिकाकेँ बंजारा युवक केष्टो भेटैत अछि जे मेला वला मैदानमे एक तम्बू गाड़ने अछि। राधिका और शम्भू दुनू एकरा अपन अपमान बूझैत अछि और केष्टोक तम्बूकेँ जारि देबाक निश्चय करैत अछि। मध्य रात्रिमे जखन ओ केष्टोक तम्बूमे प्रवेश करैत अछि तखन केष्टोक जुआन और मनोहर चेहरा देखि ओ भावावेशक लहिरसँ अभिभूत भ' जाइत अछि। ओ ओकरा जगा दैत अछि और अपना संग चलबाक लेल कहैत अछि। एक लापरवाह बंजारा और दुःसाहसी जुआन केष्टो एको क्षणक लेल संकोच नहि करैत अछि। राधिका शम्भूक तम्बू पर किरासन छीटि आगि लगा दैत अछि। "जरि कए मरि जायत बुढ़बा", ओ आनन्दित भए हँसैत अछि। जीवाक अधिकार मात्र जुआन और प्रेमी सभकेँ अछि। ई संसार वृद्ध और जर्जरक लेल नहि अछि। "बेदेनी" ताराशंकरक एक प्रमुख कथा अछि। ओ वास्तविक जीवनसँ एहि पात्रकेँ लेलनि और ओकर जीवनसँ ओ नीक जकाँ परिचित छलाह। राधिकाक चित्रणमे ताराशंकर अपन किछु प्रिय बिम्ब प्रयुक्त कैलनि अछि। राधिका कारी-नागिन सन एकहरा और लम्बा अछि। ओकर व्यक्तित्वसँ मादकता झरि रहल अछि जेना ओ सुरा-सागरसँ स्नान कए बहरायल होए। बंजारिन सभक मुस्कानक पाछाँ तीक्ष्ण धार नुकायल रहैत अछि। ओकरा सँ प्रेमक अर्थ अछि, मृत्यु। | |
|  | तारिणी मलाहक कथामे ताराशंकर मनुष्य स्वभावक नग्नतम रूप चित्रित कैलनि अछि। तारिणी मयूरक्षी नदीसँ मनौती करैछ जे बाढ़ि आबै, कियेक तँ मात्र बाढ़िये टामे ओ नाव चला सकैत अछि। बाढ़िसँ परेशान लोक ओकरा धिक्कारैत अछि। मुदा बाढ़ि सूखल खेतकेँ उर्वर बनबैत अछि और खेतक सिंचाई सेहो करैछ। तारिणी अपन पत्नीक प्रेममे अभिभूत अछि। दीर्घ अकालक पश्चात् एक भयंकर बाढ़ि अबैछ। तारिणी अपन पत्नीक संग नावमे बैसि कए भगैत अछि। नाव डूबि जाइछ। ओ भँवरमे फँसि जाइत अछि। आतंकित ओकर पत्नी ओकरासँ लपटि जाइत अछि। पानि ओकरा माथ परसँ बहि रहल अछि। आब संघर्ष एहन अछि जे मात्र एकहि व्यक्ति जीवित बचि सकैत अछि। दानबी क्रोधोन्माद मे तारिणी अपन पत्नीक कण्ठ दाबि दैत अछि और ओकर मृत चाँड़ुर सँ अपनाकेँ मुक्त करैत अछि। ओ हवामे सांस लैत अछि और जीवित रहबाक मदमस्त आनन्दक अनुभव करैत अछि। मानवक आदिम नग्नताक वर्णनमे ताराशंकर श्रेष्ठ छथि। एहन परिस्थितमे मनुष्यक एकमात्र व्यवहार ओहि मनोवेगक अनुसारेँ होइत अछि जे ओकर रक्तमे अछि, जे ओकर पाशविक मनोवेग अछि। अर्जित विशेषतासँ पृथक होयबाक पश्चात् मनुष्य केहन व्यवहार करत एकर अनुमान हुनका छलनि। |  |
|  | मानव-प्रवृत्तिमे अलौकिकताक प्रति असत्यधर्मी विश्वास प्रायः अन्तर्निहित रहैत अछि और |  |

| | | |
|---|---|---|
| | ताहि हेतु मनुष्य ओहि असत्यधर्मी विश्वासक कारणेँ अस्वभाविक कार्य क' सकैत अछि। किछु कथा सभमे एहि विषयवस्तुक प्रमुखता अछि। एहि तरहक कथा सभ एहि अप्रिय-सत्य केँ उजागर करैछ जे अंधकार युग और प्रकाश युग संग-संग चलैछ। कोनहुँ व्यक्ति अपन अधिकांश भागमे एक सभ्य व्यक्ति जकाँ आचरण करैत रहि सकैछ। मुदा, हठात् वैह व्यक्ति अपन आदिम पूर्वज जकाँ व्यवहार सेहो क' सकैछ, जे बच्चाकेँ नदीमे फेकने छल, बाल-बिधवाकेँ चितामे जारने छल, अथवा कोनहु व्यक्तिकेँ कालीक वेदीपर बलि चढ़ैने छल। "छलनामयी" कथामे कोइला–खदानक मैनेजर तांत्रिक साधनासँ परमशक्ति प्राप्त करै चाहैछ। ओ प्रकृतिपर विजय प्राप्त करै चाहैछ। ओकरा किछु शुभ-चिह्नसँ युक्त पुरुष-शवक आवश्यकता अछि। जखन ओ श्मशानसँ ओहन शव प्राप्त करबामे असफल भ' जाइछ तखन ओ ओहि चिह्नसँ युक्त एक मनुष्यकेँ मारि दैत अछि। मुदा श्मशानमे साधना करैत काल ओकरा अपन बेटीक भयाक्रांत चीत्कार सुनाइ पड़ैछ, कियेक तँ अनजानहिमे पिता अपन जमायक हत्या क' देने अछि। पिता रात्रिक अंधकारमे पड़ा जाइत अछि। आदर्श शवक उपरान्तो ओकरा अपन लक्ष्य नहि भेटैछ। परमशक्ति ओकर हाथ नहि अबैत अछि। तांत्रिक, साँप, बनजारा, शव-क्रिया, शिकार, रक्तपात, क्रूरता, बर्वरता, हिंसा, कुटिलता, पशुता—एहि विषय सभक अपार क्षमता तकनिहार ताराशंकर पहिल लेखक छलाह और ओ अपन कथा सभ मे एहि सभक अत्यन्त सफल प्रयोग कैलनि अछि। तीव्र नाटकक नीक ज्ञान रखनिहार लेखके एहन विषय सभक उपयुक्त प्रयोग क' सकैछ। ताराशंकर मे एहि तरहक नाटकीय बोध छल। हुनक संवाद नाटकीयतासँ भरल अछि। नाटकीय ढंगमे लिखल गेल "अग्रदानी" विकृत विषयपर एक नीक कथा अछि। "अग्रदानी" (ओ ब्राह्मण जे कोनहु मृतकक लेल निवेदित भोजन करैछ एवं दक्षिणा स्वीकारैछ) कथा चक्रवर्ती नामक एक ब्राह्मणक विषयमे अछि जे मृतात्माक लेल निवेदित भोजन करैछ, ताहि हेतु आन ब्राह्मण सभक घृणाक पात्र अछि। चक्रवर्तीक पत्नी और बच्चा भूखसँ मरैत अछि, मुदा ओकरा मात्र अपन पेटक चिन्ता छैक। लोलुपता ओकरा प्रायः पशु बना देने अछि। लोभवश ओ जमींदार क घर पर नजरि रखैत अछि जतय ओहि राति एकटा पुत्र जन्म लैत अछि। जमींदारक बच्चा जन्म लेबाक संगहि मरि जाइत अछि। यदि ई बच्चा जीवित रहैत तँ चक्रवर्तीकेँ जमीन और मन्दिरसँ भोजन भेटैत। ओहि राति चक्रवर्तीक पत्नी सेहो एक पुत्रकेँ जन्म दैत अछि। जखन जमींदारक बेटा मरि जाइत अछि तखन चक्रवर्ती मृत बच्चाक स्थानपर अपन बेटा राखि दैत अछि, जे जीवित अछि। ककरहु एहि अदला-बदलीक जानकारी नहि छैक। ओकर बैटा जमींदारक बैटा जकाँ पैघ होइत अछि। ओ जुआन भ' जाइछ। जखन ओ मरैत अछि तखन चक्रवर्ती मृत-भोजसँ मना करैछ मुदा जमींदार ओकरा भोजनक लेल विवश करैत अछि। ओकर अति लोभ ओकरा ई अस्वाभाविक काज करबाक लेल विवश करैछ। "पुत्रेष्टि" (पुत्र प्राप्तिक लेल कैल गेल पवित्र साधना), मे एक वृद्ध जमींदार पुत्र-प्राप्तिक लेल नर—बलिक आयोजन करैछ। ओकर पत्नी ओखर प्रयत्नकेँ विफल क' दैत अछि। | |
|  | चुड़ैलपर विश्वास प्रारम्भिक कालहिसँ चलल आबि रहल अछि। "डाइनी" (चुड़ैल) नामक कथामे ई विश्वास, मानवक अंधविश्वास और प्राकृतिक प्रकोपकेँ लेखक बड़ नीक जकाँ गँथने छथि। रौदसँ जरल मैदान मे, जतय ने घास जनमैत छल और ने चिड़ै चहचहाइत छल, ततय एक स्त्री रहैत अछि, जे गामक चुड़ैलक रूपमे जानल जाइत अछि। अनका जकाँ ओकरो ई विश्वास अछि जे ओ मानवक अनिष्ट करबाक शक्ति रखैत अछि। ओ असगर |  |

| | | |
|---|---|---|
| | रहैत अछि जकरासँ क्यो गप्प नहि करैछ। डरसँ ग्रामीण ओकरा भोजन द'अबैछ। यदि क्यो मरैत अछि तँ ओकरासँ सम्बन्ध जोड़ल जाइछ जे ओ मानव रक्तक लेल लालायित अछि। एक दिन एक प्रेमी युगल ओकर घर लग अबैत अछि। चुड़ैल मनुष्य जकाँ व्यवहार करैत ओहि लड़काकेँ सांत्वना देबाक प्रयास करैछ जकर प्रेमिका ओकरा क्रोधित भए छोड़िक' चलि गेल अछि। लड़का डेरा जाइत अछि, जरैत रौदमे घर दिसि भगैत अछि। लूसँ ओ मरि जाइछ। चुड़ैल डेरा जाइछ जे एहि बेर ग्रामवासी ओकरा मारि देतैक। ओ ओहि स्थानकेँ छोड़ि देबाक प्रयास करैछ मुदा तखनहु धूरसँ भरल प्रचण्ड आन्हि आयल और दुर्बल बुढ़ियाकेँ उड़ाय देलक। दोसर दिन ग्रामवासीकेँ एकटा गाछक ठारिमे फँसल ओकर शरीर भेटैछ। एहि अप्राकृतक मृत्युक पश्चात् ओकर चुड़ैल हैब दृढ़तासँ सिद्ध भ' जाइछ। ई कथा ताराशंकर किशोरावस्थामे देखल गामक डाइनक अनुभवपर लिखने छथि। जखन ओ विलक्षणता अवं कुटिलतापर लिखैत छथि अधिकांश समय पाठक कें लगैछ जे ओ ओहिपर विश्वास करैत छथि। अपन विषयक प्रति लेखकक मुग्धताक चलते डाइनक त्रासद मानवीय पक्ष लुप्त भ' जाइछ। | |
|  | पशुक जीवन और व्यवहारमे हुनका गम्भीर रुचि छलनि और विशेषरूपेँ साँपमे विशेष अभिरुचि छलनि। मानव-सत्ता और पशुक सम्बन्ध कथाक एक चित्ताकर्षक विषय भ' सकैछ। दू टा लेखक, प्रभातकुमार मुखर्जी और शरतचन्द्र चटर्जी एहि सम्बन्धपर दूटा उत्कृष्ट कथा लिखने छथि—"आदरिणि" (पालतू हाथी) और "महेश" (एकटा गायक नाम)। पशु विषयक, विशेष रूपसँ साँप विषयक ताराशंकरक प्रतिपादन भिन्न तरहक अछि। अंधविश्वासी और अज्ञानी कें ओ नीक जकाँ बुझैत छलाह। हुनका ज्ञात छलनि जे साँपक विषयपर भारतमे चिरकालसँ आख्यान, कथा और मिथक गढ़ल जाइत रहल अछि, किएक तँ भारतमे साँपक प्रचुरता अछि। साँप मृत्युक पर्याय सेहो अछि। भारतमे लोक सर्प-दंशक उपचारक लेल अखनुह ओझा लग जाइछ जे मन्त्र पढ़ि और जन्तरक प्रयोगसँ चिकित्सा करैछ। जखन ओ अनुभव करैछ जे दंश प्राण घातक नहि छैक तखन ओ झाड़ि-फूंकि कए प्रभावित व्यक्ति कें स्वस्थ्य करबामे प्रायः सफल भ' जाइछ। मुदा लोक प्रायः मरि जाइछ। ताराशंकरकेँ मनुष्यक अज्ञानताक ज्ञान अपन समयक कोनहु आन लेखनसँ बेसी छलनि और ओ एहि पर खूब लिखलनि। हुनका ज्ञात छलनि जेहन कि जिम कोरबे और कतेको आन लोक कहि चुकल छथि जे भारतमे लोक साँपक विषयमे बड्ड कम जनैत अछि। भारतवासीक लेल सामान्यतः साँप वंश-वृद्धि, सम्पत्ति और मृत्युक प्रतीक अछि, वस्तुतः साँपकेँ रहस्यमय एवं अलौकिक शक्तिसँ युक्त सेहो मानलजाइछ। औसत भारतवासीक लेल साँप सरीसृप प्राणी मात्र नहि आरो बहुत किछु होइछ। औसत बंगालीक एही आशुविश्वासिताक उपयोग ताराशंकर "नारी और नागिनी" कथा और "नागिनी कन्यार काहिनी" (नागिन कन्याक कथा) उपन्यास लिखैत काल कैलनि। 'नारी ओ नागिनी' मे ताराशंकर नागिनकेँ मानव गुणसँ युक्त कैलनि जे अपन सपेराक प्रति एतेक मुग्ध भ' जाइछ जे संगम–ऋतुमे ओ ओकर पत्नीकेँ डसबाक लेल पहुँचि जाइछ। "हाँसुली बांकेर उपकथा" (हँसली मोड़क उपकथा) नामक हुनक उपन्यास मे ग्रामवासी मानैछ जे विशालकाय दुबोइया (आजदहा) ओकर भोजन-संरक्षीक प्रतीक अछि। सौभाग्यसँ "कल्पहार" (भैंसाक नाम) मे भैंसाक मानवीकरण नहिभेल। ई कथा एक कृषकक अति वास्तविक त्रासदी थिक जे अपन भैंसा बेचबाक लेल बाध्य होइछ,कियैक तँ ओ आब खुआ नहि सकैछ। शहरक मवेशी-हाटमे ओ ओकरा बेचि दैत अछि। अपरिचित स्थानमे भैंसा |  |

| | | |
|---|---|---|
| | डेरा जाइछ और घरक दिस पड़ैबाक प्रयास करैछ। पुलिस निश्चय करैछ जे भैंसा पागल भ' गेल अछि और ओकरा मारि दैत अछि। "कामधेनु" अधिक संश्लिष्ट कथा अछि। बच्चा देबासँ पहिनहि दूध देबय बाली गाय दिव्य मानल जाइछ। एहन गायकेँ देवताक गाय जकाँ "सुरभि" नाम द' देल जाइछ। एहन गायक स्वामी बड़ भाग्यवान मानल जाइछ। अनपढ़ मवेशी डॉक्टर नाथू एहने एकटा व्यक्ति अछि। ओ दिव्य गायक स्तुति "सुरभि--मंगल" गबैछ और अपन क्षेत्रक बीमार गाय सभक चिकित्सा करैछ। ओ सुरभिकेँ बड़ बेसी चाहैत अछि और जखन क्षेत्रक एक धनी महिला गायकेँ किनबाक प्रस्ताव दैत अछि तखन ओ ओकरा बेचबासँ मनाकए दैत अछि कियेक तँ नाथूक दृष्टिमे ई एक पाप थिक। मुदा ओकरा फूलमणिसँ प्रेम भ' जाइछ, जकर पति एक सै टाका और पाँच मन चाउरक लेल ओकरा हेफाजद्दी शेखक हाथेँ बेचबाक निर्णय लैत अछि। सुरभि लक्ष्मी अछि, धनक स्रोत अछि, मुदा नाथूक सुन्दरी फूलमणि उर्वशी थिक। नाथू घोर पाप करैत अछि। ओहि धनी महिलाक हाथेँ सुरभिकेँ बेचि फूलमणिकेँ कीनि लैत अछि। आब ओ फूलमणिसँ घृणा करैछ कियेक तँ ओकर सम्मोहन सुरभिकेँ बेचबाक लेल बाध्य कैलक। ओकर अज्ञानी मानसक अंध गर्त्तमे धनिक महिलाक प्रति आक्रोश बढ़ैत अछि। यदि सुरभि नाथू लग नहि रहल, तँ ओ ओकरो लग नहि रहत। ओ सुरभिकेँ जहर द' दैत अछि। आब ओ स्वयं-निराकृत व्यक्ति अछि। ओ फूलमणिकेँ हेफाजद्दी शेखक हाथेँ बेचि दैत अछि और चमड़ा कमबै लगैत अछि। एहि प्रकारेँ ओकर अधः पतनआरम्भ भ' जाइछ। ओ गो-रक्षक आब गायक चाम कमाइछ। गामक रेवाजक अनुसारेँ, एक आदामी, जकर गाय मरि गेल अछि, नाथूक द्वारपर भीख मँगबाक लेल गाय जकाँ डिकरैत अबैछ। हठात् उन्मादमे नाथू ओहि व्यक्तिक हत्या क' दैत अछि। ओ गिरफ्तार क' लेल जाइछ और ओकरा फाँसीक दण्ड सुनायल जाइछ। आब ओकर हृदय शान्त अछि। यदि गायक अंतड़ीयोसँ ओकरा फाँसी देल जाय तँ ओकरा एहिसँ प्रसन्नता हैत। मृत्युक प्रतीक्षा करैत ओ काठक कोइलासँ देबालदेबाल पर फूलमणिक आँखि बनबैत अछि। वैह आँखि ओकर पतनक कारण बनल छल। | |
|  | कथा सुरभिक विषयमे कम और नाथूक मानसक वक्र प्रक्रियाक विषयमे बेसी अछि। साधारण व्यक्तिऔर ओकर मनक कार्य-कलापक विषयमे ताराशंकरक ज्ञान आश्चर्यजनक अछि। ओ सजग शैलीकार नहि छथि। शब्द और मुहाबरा सभक प्रयोग ओ स्पष्टतः असावधानीसँ कैलनि। एक भावात्मक लेखक जकाँ ओ अपन कथा कोनो तरहेँ कहैत छथि। हुनका लेल, ई एक तरहक शैली बनि गेल। ओ एहि तरहेँ लिखैत छथि जे क्रूरता, अनाशक्ति और निष्ठुरताक मिलल-जुलल अनुभव होइछ। अपन विषय सभक हुनक कलात्मक प्रतिक्रिया तत्वतः पुरुषोचित होइछ। पाठकक प्रतिक्रिया अछि जे ताराशंकर मात्र कथा प्रस्तुत नहि क' रहल छथि, अपितु ओ स्वयं अपन जीवनक अंश द' रहल छथि। अनगढता, विश्रृंखलता और फूहड़ताकेँ साहित्यक सन्दर्भमे नहि परखल जा सकैछ। यदि हुनक लेखनमे ई सब दोष अछि, तँ ई दोष मानव-जीवनक ढ़ाँचामे अछि। मानव-जीवन अनगढ़ता, विश्रृंखलता एवं अप्रिय आश्चर्य सभसँ भरल अछि। हुनक भाषा पुरुष, ओजस्वी और प्रायः आलंकारिकतासँ भरल अछि। यदि भाषा और शैलीक प्रति बेसी सजग कलाकार रिहतथि तँ सदिखन वैह नहि लिखितथि जे ओ देखलनि। ओ विषयकेँ अपन मस्तिष्कमे धारण करैत छलाह और ओकरा प्रस्फुटित होयबाक अवसर दैत छलाह जाहि सँ भाषा और शैलीक सूक्ष्मता उत्पन्न होइत छल। मुदा तखन ओ ओहि भावावेगकेँ सम्प्रेषित नहि क' सकैत छलाह जे हुनका विचलित |  |

| | | |
|---|---|---|
| | करैवला वस्तु सभपर लिखबाक लेल वाध्य करैत छल। | |

</body></text>
</Doc>